

पञ्चदशः पाठः



प्रहेलिकाः

[पहेलियाँ मनोरञ्जन की प्राचीन विधा है। ये प्राय: विश्व की सारी भाषाओं में उपलब्ध हैं। संस्कृत के कवियों ने इस परम्परा को अत्यन्त समृद्ध किया है। पहेलियाँ जहाँ हमें आनन्द देती हैं, वहीं समझ-बूझ की हमारी मानसिक व बौद्धिक प्रक्रिया को तीव्रतर बनाती हैं। इस पाठ में संस्कृत प्रहेलिका (पहेली) बूझने की परम्परा के कुछ रोचक उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं।]

> कस्त्ररी जायते कस्मात्? को हन्ति करिणां कुलम्? किं कुर्यात् कातरो युद्धे? मृगात् सिंह: पलायते ॥।।।

> > सीमन्तिनीषु का शान्ता? राजा कोऽभूत् गुणोत्तमः? विद्वद्भि: का सदा वन्द्या? अत्रैवोक्तं न बुध्यते ॥२॥

सञ्जघान कृष्ण:? का शीतलवाहिनी गङ्गा? के दारपोषणरता:? कं बलवन्तं न बाधते शीतम् ॥३॥

> वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराज: त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणि:। त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी जलं च बिभ्रन्न घटो न मेघ: ॥४॥

भोजनान्ते च किं पेयम्? जयन्तः कस्य वै सुतः? कथं विष्णुपदं प्रोक्तम्? तक्रं शक्रस्य दुर्लभम् ॥५॥

प्रहेलिकानामुत्तरान्वेषणाय सङ्कोताः

प्रथमा प्रहेलिका - अन्तिमे चरणे क्रमशः त्रयाणां प्रश्नानां

त्रिभि: पदै: उत्तरं दत्तम्।

द्वितीया प्रहेलिका - प्रथम-द्वितीय-तृतीय-चरणेषु प्रथमस्य वर्णस्य

अन्तिमवर्णेन संयोगात् उत्तरं प्राप्यते।

तृतीया प्रहेलिका - प्रतिऽचरणे प्रथमद्वितीययो: प्रथमत्रयाणां वा

वर्णानां संयोगात् तस्मिन् चरणे प्रस्तुतस्य

प्रश्नस्य उत्तरं प्राप्यते।

चतुर्थप्रहेलिकायाः उत्तरम् - नारिकेलफलम्।

पञ्चमप्रहेलिकायाः उत्तरम् - प्रथम-प्रहेलिकावत्।



हन्ति – मारता/मारती है

कातरः – कमजोर

सीमन्तिनीषु - नारियों में

कोऽभूत् (क:+अभूत्) - कौन हुआ

सञ्जघान - मारा

कंसञ्जघान (कंसं+जघान) - कंस को मारा

शीतलवाहिनी - ठंडी धारा वाली





काशीतलवाहिनी काशी की भूमि पर बहने वाली दारपोषणरताः पत्नी के पोषण में संलग्न केदारपोषणरताः खेत के कार्य में संलग्न वह व्यक्ति जिसके पास कंबल है कंबलवन्तम् पेड़ के ऊपर रहने वाला वृक्षाग्रवासी (वृक्ष+अग्रवासी) पक्षिराजः पक्षियों का राजा (गरुड़) त्रिनेत्रधारी तीन नेत्रों वाला (शिव) जिनके हाथ में त्रिशूल है (शंकर) शूलपाणि: त्वग् त्वचा, छाल बिभ्रन् धारण करता हुआ विष्णुपदम् स्वर्ग, मोक्ष छाछ, मठा तक्रम् शक्रस्य इन्द्र का





1. श्लोकांशेषु रिक्तस्थानानि पूरयत-

- (क) सीमन्तिनीषु का """ राजा """ गुणोत्तम:।
- (ख) कं सञ्जघान का गङ्गा?
- (ग) के "" न बाधते शीतम्।।
- (घ) वृक्षाग्रवासी न च न च शूलपाणि:।

2. श्लोकांशान् योजयत-

क किं कुर्यात् कातरो युद्धे

अत्रैवोक्तं न बुध्यते।



| | विद्वद्भि: का सदा वन्द्या | | क्रस्य दुर्लभम्। | | |
|-----|-----------------------------|---------------------|------------------|-----------|--|
| | कं सञ्जघान कृष्ण: | मृगात् र् | संह: पलायते। | | |
| | कथं विष्णुपदं प्रोक्तं | काशीतर | नवाहिनी गङ्गा। | | |
| 3. | उपयुक्तकथनानां समक्षम् | 'आम्' अनुपयुक्तकः | यनानां समक्षं न | इति लिखत- | |
| | यथा- सिंह: करिणां कुलं | हन्ति। | आम् | | |
| | (क) कातरो युद्धे युद्ध्यते। | | | | |
| | (ख) कस्तूरी मृगात् जायते। | | | | |
| | (ग) मृगात् सिंहः पलायते। | | | | |
| | (घ) कंस: जघान कृष्णम्। | | =,6 | | |
| | (ङ) तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्। | | | | |
| | (च) जयन्तः कृष्णस्य पुत्रः | :1 | | | |
| 4. | सन्धिविच्छेदं पूरयत- | | | | |
| | (क) करिणां कुलम् | | + | | |
| | (ख) कोऽभूत् | | + | ••••• | |
| | (ग) अत्रैवोक्तम् | | + | | |
| | (घ) वृक्षाग्रवासी | | + | ••••• | |
| | (ङ) त्वग्वस्त्रधारी | | + | ••••• | |
| | (च) बिभ्रन | | + | ***** | |
| | | | | | |
| 5. | अधोलिखितानां पदानां लि | ाङ्गं विभक्तिं वचनञ | च लिखत- | | |
| | पदानि | लिङ्गम् | विभक्तिः | वचनम् | |
| यथा | – करिणाम् | पुँल्लिङ्गम् | षष्ठी | बहुवचनम् | |
| | | | | | |
| V U | देलिका. | | | | |

| | | कस्तूरी | | | •••••• | *************************************** | | |
|-----|--------------------------------------|---------------------|------------------|-------------------|-----------------------|---|--|--|
| | | युद्धे | | ••••• | ••••• | *************************************** | | |
| | | सीमन्तिनीषु | | ••••• | ••••• | *************************************** | | |
| | | बलवन्तम् | | ••••• | ••••• | *************************************** | | |
| | | शूलपाणि: | | *********** | *********** | ************** | | |
| | | शक्रस्य | | *********** | ••••• | ••••• | | |
| 6. | 6. (अ) विलोमपदानि योजयत- | | | | | | | |
| | | जायते | शान्ता | | | | | |
| | | वीर: | पलायते | | | | | |
| | | अशान्ता | म् <u>रि</u> यते | | | | | |
| | | मूर्खै: | | | | | | |
| | | • (| कातर: | | | | | |
| | | अत्रैव | विद्वद्भि: | | | | | |
| | | आगच्छति | तत्रैव | | | | | |
| (आ |) सा | गानार्थकप दं | चित्वा वि | लेखत- | | | | |
| | (क) | करिणाम् | | । (अश्वानाम्/ग | गजानाम्/गर्दभानाम्) | | | |
| | (폡) | अभृत् | | । (अचलत्/अहस | त्/अभवत्) | | | |
| | | | | । (वन्दनीया/स्मरण | ` ` | | | |
| | | | | । (लिख्यते/अवग | | | | |
| | | | | । (तडाग:/नल:/कु | | | | |
| | (च) सञ्जघान। (अमारयत्/अखादत्/अपिबत्) | | | | | | | |
| | (प) | લગ્ગવાન | ••••• | । (अमारयत्/उ | નહાદત્/આપથત્ <i>)</i> | | | |

| _ | <u> </u> | | | |
|----|-----------------|------------------------------|---------|--------|
| 7. | काष्ठकान्तगताना | पदानामुपयुक्तविभक्तिप्रयोगेन | अनुच्छद | पूरयत- |

एक: काक: """ (आकाश) डयमान: आसीत्। तृषार्त: स: """ (जल) अन्वेषणं करोति। तदा स: """ (घट) अल्पं """ (जल) पश्यित। स: """ (उपल) आनीय """ (घट) पातयित। जलं """ (घट) उपरि आगच्छित। """ (काक) सानन्दं जलं पीत्वा तृप्यित।

योग्यता-विस्तारः

प्रस्तुत पाठ में दी गयी पहेलियों के अतिरिक्त कुछ अन्य पहेलियाँ अधोलिखित हैं। उन्हें पढ़कर स्वयं समझने की कोशिश करें और ज्ञानवर्धन करें यदि न समझ पायें तो उत्तर देखें।

- (क) चक्री त्रिशूली न हरो न विष्णुः।

 महान् बलिष्ठो न च भीमसेनः।

 स्वच्छन्दगामी न च नारदोऽपि

 सीतावियोगी न च रामचन्द्रः॥
- (ख) न तस्यादिर्न तस्यान्तः मध्ये यस्तस्य तिष्ठति। तवाप्यस्ति ममाप्यस्ति यदि जानासि तद्वद॥
- (ग) अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डित:। अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डित:॥

उत्तर-(क) वृषभ:, (ख) नयनम्, (ग) पत्रम्

